Credit Framework for Under Graduate (UG)

सावित्रीबाई फुले पुणे विश्वविद्यालय,पुणे

हिंदी अध्ययन मंडल

बी.ए.प्रथम वर्ष के लिए निर्धारित पाठ्यक्रम का ढाँचा

1) Major Core 04 Theory 02 Practical (Major Core 90 Lectures)

प्रथम अयन

पाठ्यक्रम का शीर्षक :- हिंदी साहित्य विविधा (कविता /कहानी)

लक्ष्य (Aim)

हिंदी कविता के जिस स्वरूप से आज हमारा साक्षात्कार होता है, उसके पीछे शताब्दियों का लंबा और क्रमबद्ध इतिहास है। सच्चाई तो यह है कि 19वीं शताब्दी तक हिंदी साहित्य का लेखन कविता के रूप में ही होता आया है। आदिकालीन कविताओं में वीर गाथाओं का चित्रण हुआ है। भक्तिकाल में कवियों ने ईश्वर के निर्गुण-सगुण रूपों को साकार किया है। रीतिकाल में नायिका के नखसीख वर्णन के साथ नीति निरूपण भी किया गया है। आधुनिक हिंदी कविता जीवन संबंधित हर विषय पर भाष्य करती है।

हिन्दी कहानी अपने विशिष्ट रूप में उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध से आरम्भ होती है और आधुनिक हिन्दी कहानी का उत्थान वास्तव में बीसवी सदी के प्रथम दशक में हुआ है। इस तरह हिन्दी कहानी साहित्य की विकास यात्रा व्यापक है। हिन्दी कहानी-साहित्य अन्य साहित्यांगों की अपेक्षा अधिक गतिशील है। मासिक और साप्ताहिक पत्र-पत्रिकाओं के नियमित प्रकाशन ने इस साहित्य के विकास में बहुत अधिक योग दिया है। फलस्वरूप कहानी-साहित्य में सर्वाधिक प्रयोग हुए है।

मनोरंजन की लहरें उठानेवाली कविता और कहानी आज केवल मन को बहलानेवाली बातें नहीं कहती है। उनमें जीवन की गहराई एवं जीवन का सत्य दिखाई देता है। वर्तमान कविता और कहानी का क्षेत्र बहुत व्यापक हो गया है। नीति व्यवहार, मनोविज्ञान, विचार, जीवन के प्रति नई सोच, व्यक्तिगत एवं सामाजिक कई क्षेत्रों को कविता और कहानी बयान कर रही है। आज अध्ययन अध्यापन एवं शोध कार्य की दृष्टि से हिंदी कविता और कहानी साहित्य का क्षेत्र बृहत है। मानव जाति के लिए वैयक्तिक एवं सहजीवन की दृष्टि से हिंदी कविता और कहानी साहित्य महत्वपूर्ण है।

परिणाम (Outcomes):

1. हिंदी कविता और कहानी साहित्य के इतिहास से अवगत होंगे।
2. हिंदी कविता और कहानी साहित्य के माध्यम से जीवन मूल्य सीखने को मिलेंगे।

3. जयशंकर प्रसाद, सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला', रामकुमार वर्मा, अटल बिहारी वाजपेयी, कात्यायनी, जयकुमार जलज की कविताओं का आस्वादन करेंगे।
4. सोहनलाल द्विवेदी, मैथिलीशरण गुप्त, नागार्जुन, केदारनाथ अग्रवाल, ओमप्रकाश वाल्मीकि, कीर्ति चौधरी आदि की कविताओं से जीवन संघर्ष सीखेंगे।
5. सुदर्शन, प्रेमचंद, विद्यानिवास मिश्र, महीप सिंह,जैनेंद्र कुमार, अमरकांत, ए.पी.जे.अब्दुल कलाम, स्वयं प्रकाश की कहानियाँ पढ़कर विविध जीवन मूल्यों से अवगत होंगे।
6. सुमित्रानंदन पन्त, धूमिल, अरुण कमल, ज्ञानेंद्रपति, श्योराज सिंह 'बेचैन', निर्मला पुतुल की काव्य कला सीखेंगे।
7. शरद जोशी, हरिशंकर परसाई, नरेंद्र कोहली आदि के व्यंग्य कहानियों से सामाजिक, राजनीतिक वास्तविकता को समझेंगे।
8. महादेवी वर्मा, रामवृक्ष बेनीपुरी, विष्णु प्रभाकर के रेखाचित्र साहित्य का परिचय होगा।
9. विनोद रस्तोगी, रामकुमार वर्मा, भारत भूषण अग्रवाल की एकांकी साहित्य का आस्वादन करेंगे।
10. काव्य, कहानी, व्यंग्य, रेखाचित्र, एकांकी आदि विधाओं का मौलिक लेखन करना सीखेंगे।

इकाई I	आधुनिक कविता	कवि का नाम
1	भारत देश	जयशंकर प्रसाद
2	अभी न होगा मेरा अंत	सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला
3	मौन करुणा	रामकुमार वर्मा
4	गीत नया गाता हूँ	अटल बिहारी वाजपेयी
5	सात भाइयों के बीच चंपा	कात्यायनी
6	माँ से प्रार्थना	जयकुमार जलज
इकाई II	**आधुनिक कविता**	**कवि का नाम**
1	कोशिश करनेवालों की कभी हार नहीं होती	सोहनलाल द्विवेदी
2	अपनी भाषा	मैथिलीशरण गुप्त
3	वे और तुम	नागार्जुन
4	जो शिलाएँ तोड़ते हैं	केदारनाथ अग्रवाल
5	पेड़	ओमप्रकाश वाल्मीकि
6	एकलव्य	कीर्ति चौधरी
इकाई III	**आधुनिक कहानी**	**कहानीकार का नाम**
1	आदर्श बदला	सुदर्शन
2	नशा	प्रेमचंद
3	आँगन का पंछी	विद्यानिवास मिश्र
4	पानी और पुल	महीप सिंह
इकाई IV	**आधुनिक कहानी**	**कहानीकार का नाम**
1	पढाई	जैनेंद्र कुमार
2	घर	अमरकांत
3	जब मैं फेल हुआ	ए.पी.जे.अब्दुल कलाम
4	जंगल का दाह	स्वयं प्रकाश
इकाई V	**प्रत्यक्ष कार्य** काव्य तत्त्व के आधारपर काव्य आस्वादन , मूल्यांकन ,मौलिक लेखन ,प्रस्तुतिकरण	
इकाई VI	**प्रत्यक्ष कार्य** कहानी के तत्त्व के आधारपर कहानी का आस्वादन मूल्यांकन,लेखन ,प्रस्तुतिकरण	

1B) Major Core 04 Theory + 02 Practical (Major Core 90 lectures)

व्दितीय अयन

पाठ्यक्रम का शीर्षक :- हिंदी साहित्य विविधा (कविता,गद्य व्यंग्य,रेखाचित्र,एकांकी)

इकाई I	कविता	कवि का नाम
1	सुख दुःख	सुमित्रानंदन पन्त
2	लोहे का स्वाद	धूमिल
3	नए इलाके में	अरुण कमल
4	नदी और साबुन	ज्ञानेंद्रपति
5	माँ हो	श्योराज सिंह बेचैन
6	उतनी दूर मत ब्याहना बाबा	निर्मला पुतुल
इकाई II	**हिंदी गद्य व्यंग्य**	**व्यंग्यकार का नाम**
1	तुम कब जाओगे अतिथि	शरद जोशी
2	दो नाकवाले लोग	हरिशंकर परसाई
3	रिश्तों से बढ़कर	नरेंद्र कोहली
इकाई III	**रेखाचित्र**	रेखाचित्रकार का नाम
1	घीसा	महादेवी वर्मा
2	सुभान खां	रामवृक्ष बेनीपुरी
3	शमशु मिस्त्री	विष्णु प्रभाकर
इकाई IV	**एकांकी**	**एकांकीकार का नाम**
1	बहू की विदा	विनोद रस्तोगी
2	पृथ्वीराज की आँखें	रामकुमार वर्मा
3	महाभारत की एक साँझ	भारत भूषण अग्रवाल
इकाई V	**प्रत्यक्ष कार्य** व्यंग्य,रेखाचित्र, आदि विधागत तत्त्व के आधार पर आस्वादन , मूल्यांकन,मौलिक लेखन एवं प्रस्तुतिकरण	
इकाई VI	**प्रत्यक्ष कार्य** एकांकी ,कविता आदि का विधागत तत्त्व के आधारपर आस्वादन , मूल्यांकन,मौलिक लेखन, प्रस्तुतिकरण	

2) VSC (Vocational Skill Course) 02 Credit (Theory)

प्रथम अयन

पाठ्यक्रम शीर्षक :- अनुवाद : स्वरूप एवं भेद

लक्ष्य (Aims)

वर्तमान युग अनुवाद का युग माना जाता है। वैदिक युग के 'पुनः कथन' से लेकर वर्तमान के 'अनुवाद' तक आते-आते अनुवाद के क्षेत्र में आमूलचूल परिवर्तन हुए हैं। चूँकि आरंभ में अनुवाद का प्रयोजन 'स्वांत सुखाय' के रूप में था लेकिन वर्तमान में यह व्यवसाय या करियर का मुख्य आधार बन गया है। समूचे विश्व में अनुवाद की महता किसी न किसी रूप में अवश्य महसूस होती है। राजनीति, आर्थिक, वैज्ञानिक, प्रशासनिक, सामाजिक, धार्मिक,

प्रौद्योगिकी, साहित्यिक, सांस्कृतिक आदि हर क्षेत्र में अनुवाद का उपयोग हो रहा है। विश्व की सभ्यताओं एवं संस्कृतियों में अनुवाद की भूमिका हमेशा ही उल्लेखनीय रही है।

चूँकि भारत बहुभाषी और बहु-सांस्कृतिक देश है। अतः इसकी अखंडता और सांस्कृतिक एकसूत्रता बनाए रखने के लिए अनुवाद की नितांत आवश्यकता है। भारतीय भाषाओं में जो साहित्य लिखा जा रहा है, यदि वह आपसी भाषाओं (भारतीय) अनूदित होकर पाठकों के सम्मुख आता है, तो भारतीयता की अवधारणा स्वयं ही दृढ़ हो जाएगी। इसलिए स्नातक स्तर के प्रथम वर्ष के छात्रों के लिए अनुवाद पाठ्यक्रम की आवश्यकता है।

परिणाम (Outcomes)

1. छात्र अनुवाद की अवधारणा समझेंगे।
2. अनुवाद का स्वरूप एवं भेद सीखेंगे।
3. अनुवादक के लिए आवश्यक गुणों को अवगत करेंगे।
4. अनुवाद की समस्याओं को समझेंगे।
5. साहित्येतर अनुवाद का स्वरूप समझकर प्रत्यक्ष साहित्येतर अनुवाद करेंगे।
6. अनुवाद में समतुल्यता सिद्धांत के महत्व को समझेंगे।
7. साहित्य और साहित्येतर अनुवाद में निहित अंतर को समझेंगे।
8. प्रत्यक्ष अनुवाद करने में सक्षम बनेंगे।

इकाई-I	**1**	**अनुवाद : अर्थ**,परिभाषा और **स्वरूप**
	2	अनुवाद प्रक्रिया के सोपान
	3	अनुवाद : सहायक सामग्री
	4	स्त्रोत भाषा,लक्ष्य भाषा समतुल्यता का सिद्धांत
	5	अनुवादक के गुण
इकाई-II		**अनुवाद के प्रकार**
	1	**साहित्यिक अनुवाद**
		काव्यानुवाद ,कथानुवाद,नाटयानुवाद
	2	**साहित्येतर अनुवाद**
		विज्ञापन,समाचार पत्र,संविधान,अधिनियम,अध्यादेश,बैंक, रेल, रक्षा,कृषि,खेल और विधि अनुवाद आदि का सामान्य परिचय

2B) VSC (Vocational Skill Course) 02 Credit (practical)

व्दितीय अयन

पाठ्यक्रम शीर्षक :- अनुवाद व्यवहार

	अ.क्र.	**पाठ्यक्रम**
इकाई-I		**प्रात्यक्षिक -साहित्यिक अनुवाद**
		काव्य,कहानी, उपन्यास तथा नाटक का प्रत्यक्ष अनुवाद कार्य 25 पृष्ठ
इकाई-II		**प्रात्यक्षिक - साहित्येतर अनुवाद**
		विज्ञापन,समाचार पत्र,संविधान, अधिनियम,अध्यादेश,बैंक, रेल, रक्षा,कृषि,खेल और विधि अनुवाद कार्य 25 पृष्ठ

3) भारतीय ज्ञान परंपरा Indian Knowledge System IKS 2 credits (Theory)

प्रथम अयन

पाठ्यक्रम शीर्षक :- भारतीय ज्ञान परंपरा IKS

लक्ष्य (Aims) :

भारतीय ज्ञान परंपरा विशाल एवं समृद्ध है। भारत में नालंदा और तक्षशिला जैसे अंतर्राष्ट्रीय विश्वविद्यालय विद्यमान थें। जहाँ विश्व के कोने-कोने से विद्यार्थी ज्ञानार्जन के लिए आते थें। भारतीय ज्ञान परंपरा में दर्शन, अध्यात्म, विज्ञान, गणित, चिकित्सा, सामाजिक विज्ञान, कला और साहित्य समाविष्ट हैं। साहित्य में यह ज्ञान परंपरा प्राचीन ग्रंथों, दार्शनिक ग्रंथों, धार्मिक ग्रंथों, महाकाव्यों, कविता और कहानी तक विस्तृत है। यह जीवन के शारीरिक, मानसिक, भावनात्मक और आध्यात्मिक पहलुओं को शामिल करते हुए समग्र कल्याण पर जोर देती है। पारंपरिक भारतीय ज्ञान प्रकृति के साथ सद्भाव में रहने पर जोर देता है। पर्यावरण के प्रति सम्मान, स्थिरता और पारिस्थितिक संतुलन विभिन्न सांस्कृतिक प्रथाओं, अनुष्ठानों और दार्शनिक दृष्टिकोणों में अंतर्निहित हैं। भारतीय ज्ञान परंपरा सामाजिक सद्भाव, करुणा, सहानुभूति और नैतिक जीवन के सिद्धांतों का बखान करती है।

भारत विभिन्न आध्यात्मिक प्रथाओं और परंपराओं के लिए उपजाऊ भूमि है जिसमें बौद्ध धर्म, जैन धर्म, सिख धर्म और हिंदू धर्म के विभिन्न संप्रदाय शामिल हैं। ये परंपराएँ आत्म-बोध, करुणा और आत्मज्ञान पर केंद्रित हैं। बौद्ध और जैन साहित्य भारत की समृद्ध साहित्यिक विरासत का अभिन्न अंग हैं। दोनों ही अहिंसा, नैतिक जीवन, करुणा और आध्यात्मिक मुक्ति के मार्ग पर जोर देते हैं। बौद्ध साहित्य में त्रिपिटक प्रारंभिक बौद्ध ग्रंथों का मुख्य संग्रह है। साथ ही जातक कथाएँ बौद्ध साहित्य का हिस्सा हैं। माना जाता है कि इन्हें स्वयं बुद्ध ने विभिन्न जीवन पाठ सिखाने के लिए नैतिक उपाख्यानों के रूप में सुनाया था। इसके अतिरिक्त थेरागाथा प्रारंभिक बौद्ध भिक्षुओं की कविताओं या छंदों का एक संग्रह है जो थेरवाद बौद्ध धर्म के प्राथमिक पाठ्य स्रोत में संरक्षित है। ये छंद बुजुर्ग भिक्षुओं द्वारा बोले गए हैं जो उनके व्यक्तिगत अनुभवों, संघर्षों, अहसासों और आत्मज्ञान के मार्ग को व्यक्त करते हैं। थेरागाथा को थेरीगाथा द्वारा पूरक किया गया है जो प्रारंभिक बौद्ध भिक्षुणियों के छंदों का एक संग्रह है। प्रत्येक अध्याय अलग-अलग भिक्षुओं और आत्मज्ञान के मार्ग पर उनकी व्यक्तिगत यात्राओं को समर्पित है। उनके विषय अनित्यता, पीड़ा की प्रकृति, ध्यान का अभ्यास, बाधाओं पर काबू पाने और आत्मज्ञान की प्राप्ति के इर्द-गिर्द घूमते हैं। इन थेरीगाथाओं का अध्ययन निश्चित ही छात्रों के लिए लाभदायक होगा।

वेदांत, न्याय, वैशेषिक, सांख्य, योग और मीमांसा जैसे दर्शनशास्त्र के विद्यालय वास्तविकता, ज्ञान, नैतिकता और जीवन के अर्थ पर विभिन्न दृष्टिकोण प्रदान करते हैं। ये दर्शन कर्म, धर्म, मोक्ष और अस्तित्व की प्रकृति जैसी अवधारणाओं का पता लगाते हैं। कर्म का सिद्धांत, स्वामी विवेकानन्द के दर्शन का एक मूलभूत पहलू था। वह कर्म के महत्व और आध्यात्मिक विकास में इसकी भूमिका में विश्वास करते थे।

निःस्वार्थ कर्म, मानवता की सेवा, कर्म ही पूजा, वैराग्य और त्याग पर कर्म सिद्धांत के महत्वपूर्ण पहलू हैं। जो सबके लिए प्रेरणा प्रदान करता है।

महात्मा ज्योतिराव फुले एक महान समाज सुधारक, विचारक और कार्यकर्ता थें। उनका दर्शन और कार्य सामाजिक न्याय, शिक्षा और हाशिए पर रहने वाले समुदायों, विशेषकर महिलाओं और निचली जातियों के उत्थान हेतू महत्वपूर्ण है। उनके प्रयासों ने भारत में बाद के सामाजिक आंदोलनों और सुधारों की नींव रखी गई। ज्योतिराव फुले का दर्शन सामाजिक सुधार, शिक्षा और समाज के सभी सदस्यों के लिए न्याय और समानता की खोज में गहराई से निहित था। उन्होंने सामाजिक समानता और न्याय, सभी के लिए शिक्षा, महिलाओं के अधिकार, ग्रामीण उत्थान और किसान अधिकार आदि पर अपना मौलिक चिंतन प्रस्तुत किया है। उनका चिंतन आज भी प्रासंगिक है।

परिणाम (Outcomes) :

1. छात्र भारतीय ज्ञान परंपरा को समझेंगे।
2. आंतरिक सद्भाव और शांति की भावना को बढ़ावा मिलेगा।
3. अहिंसा, सेवा और करुणा जैसे सार्वभौमिक मूल्यों के प्रति जागरुक होंगे।
4. व्यक्तिगत, आध्यात्मिक और नैतिक विकास प्राप्त करेंगे।
5. कर्म के प्रति निष्ठा जागृत होगी।
6. समाजसेवा एवं परोपकार का भाव जागृत होगा।
7. शिक्षा का उद्देश्य एवं महत्त्व समझेंगे।
8. श्रम प्रतिष्ठा का महत्त्व समझेंगे।
9. स्त्री-पुरुष समानता का विचार स्थापित होगा।
10. अच्छे नागरिक तैयार होंगे।

इकाई-I		**थेरीगाथा एवं थेरगाथा**
	1	थेरीगाथा एवं थेरगाथा का परिचय
	2	थेरीगाथा एवं थेरगाथा का महत्त्व
		थेरीगाथा - i)अभया थेरीगाथा ii) जन्ता थेरीगाथा iii)उत्तर थेरीगाथा iv)धम्मदिन्ना थेरीगाथा **थेरगाथा –** i) पुणत्थेरगाथा ii)दब्बत्थेरगाथा iii)वीरत्थेरगाथा iv)सिंगालपित्थेरगाथा
इकाई-II	1	**स्वामी विवेकानंद का कर्मयोग**
		i)कर्म का चरित्र पर प्रभाव ii) मनुष्य मात्र महान है iii)कर्म का रहस्य: निस्वार्थ परोपकार iv)कर्तव्यों के संबंध में विचार
	2	**महात्मा ज्योतिबा फुले का चिंतन**
		i)शिक्षा विषयक विचार ii) कृषि सुधार विषयक विचार iii)नारी मुक्ति विषयक विचार

3B) Minor 2 credits (Theory)

व्दितीय अयन

पाठ्यक्रम शीर्षक :- भक्तिकाव्य (कबीर/रहीम तथा सूरदास/मीरा)

प्रचलित और गेय दोहे और पद

इकाई-I	**कबीर और रहीम**	
	कबीर	
1.	गुरु गोविन्द दोउ खड़े,काके लागू पाय, बलिहारी गुरु आपने जिन गोविन्द दियो बताय |	
2.	सतगुरु की महिमा अनंत,अनंत किया उपगार, लोचन अनंत उघाडिया अनंत दिखावन हार|	कबीर ग्रंथावली – शामसुंदर दास
3.	कबीर गुरु गरवा मिल्या,रलि गया आटे लूँण, जाति पांति कुल सब मिटें,नौंव धरौगे कौण|	
4.	सतगुरु बपुरा क्या करें,जे सिषही माँहे चूक, भावे त्यूं प्रमोधि ले,ज्यूँ वंसी बजाई फूँक|	
5.	बूढ़े थे परी ऊबरे,गुर की लहरि चमंकि, भेरा देख्या जरजरा,ऊतरी पड़े फरंकि|	
6.	भली भई गुरु मिल्या,	
7.	जाका गुरु भी अंधला,चेला खरा निरंध| अंधे अँधा ठेलियां,दोनों कूप पडंत||	
	रहीम	
1.	रहिमन धागा प्रेम का मत तोड़ो छिटकाय| टूटे से फिर ना मिले,मिले गांठ परि जाए ||	
2.	रहिमन पानी राखिएं,बिनु पानी सब सून, पानी गए न ऊबरे, मोती,मानुष चून|	
3.	रहिमन निज मन की बिथा,मन ही राखे गोय, सुनि अठिलैहे लोग सब,बांटी न लैहें कोय|	
4.	नर की अरु नल – नीर की,गति एकै कर जोई, जेतो नीचे है चले,तेतो ऊंचो होई|	
5.	रहीमन देखि बड़ेंन को लघु न दीजिए डारी, जहाँ काम आवै सुई क्या करै तरवारि|	
6.	टूटे सुजन मनाइए,जो टूटे सौ बार, रहिमन फिरि फिरि पोहिए,टूटे मुक्ताहार|	
7.	कही रहीम संपति सगे बनत बहुत बहु रीत, बिपत कसौटी जे कसे,सोई सांचे मीत|	
इकाई-II	**सूरदास**	

1.	मैया मोरी मैं नहिं माखन खायो | भोर भयो गैयन के पाछे, मधुवन मोहिं पठायो । चार पहर बंसीबट भटक्यो, साँझ परे घर आयो ॥ मैं बालक बहिंयन को छोटो, छींको किहि बिधि पायो । ग्वाल बाल सब बैर परे हैं, बरबस मुख लपटायो ॥ तू जननी मन की अति भोरी, इनके कहे पतिआयो । जिय तेरे कछु भेद उपजि है, जानि परायो जायो ॥ यह लै अपनी लकुटि कमरिया, बहुतहिं नाच नचायो । 'सूरदास' तब बिहँसि जसोदा, लै उर कंठ लगायो ॥	
2.	मैया मोहिं दाऊ बहुत खिझायो। मो सों कहत मोल को लीन्हों तू जसुमति कब जायो॥ कहा करौं इहि रिस के मारें खेलन हौं नहिं जात। पुनि पुनि कहत कौन है माता को है तेरो तात॥ गोरे नंद जसोदा गोरी तू कत स्यामल गात। चुटकी दै दै ग्वाल नचावत हंसत सबै मुसुकात॥ तू मोहीं को मारन सीखी दाउहिं कबहुं न खीझै। मोहन मुख रिस की ये बातैं जसुमति सुनि सुनि रीझै॥ सुनहु कान बलभद्र चबाई जनमत ही को धूत। सूर स्याम मोहिं गोधन की सौं हौं माता तू पूत॥	
3.	मैया, कबहिं बढ़ैगी चोटी? किती बार मोहि दूध पियत भइ, यह अजहूँ है छोटी॥ तू जो कहति बल की बेनी ज्यौं, ह्वैहै लाँबी-मोटी। काढ़त-गुहत-न्हवावत जैहै नागिनि-सी भुइँ लोटी॥ काँचौ दूध पियावति पचि-पचि, देति न माखन-रोटी। सूरज चिरजीवौ दोउ भैया, हरि-हलधर की जोटी॥	
4.	किलकत कान्ह घुटुरुवनि आवत ॥ मनिमय कनक नंद कै आँगन, बिम्ब पकरिबै धावत ॥ कबहुँ निरखि हरि आपु छाँह कौ, कर सौं पकरन चाहत । किलकि हँसत राजत द्वै दतियाँ, पुनि-पुनि तिहिं अवगाहत ॥ कनक-भूमि पर कर-पग छाया, यह उपमा इक राजति । करि-करि प्रतिपद प्रतिमनि बसुधा, कमल बैठकी साजति ॥ बाल-दसा-सुख निरखि जसोदा, पुनि-पुनि नंद बुलावति । अँचरा तर लै ढाँकि, सूर के प्रभु को दूध पियावति ॥	
	मीरा	

1.	पायो जी मैने राम रतन धन पायो वस्तु अमौलिक दी मेरे सतगुरु, किरपा करि अपनायो पायो जी मैने… जनम जनम की पूंजी पाई, जग में सभी खोवायो पायो जी मैने… खर्च ना खूटे वाको चोर ना लूटे, दिन दिन बढ़त सवायो पायो जी मैने… सत की नांव, खेवटिया सतगुरु, भवसागर तर आयो पायो जी मैने… मीरा के प्रभु गिरधर नागर, हरख हरख जस गायो पायो जी मैने राम रतन धन पायो	
2.	मैं गिरधर के घर जाऊँ। गिरधर म्हाँरो साँचो प्रीतम देखत रूप लुभाऊँ॥ रैण पड़ै तब ही उठ जाऊँ भोर भये उठ आऊँ। रैण दिना वा के संग खेलूँ ज्यूँ त्यूँ ताही रिझाऊँ॥ जो पहिरावै सोई पहिरूँ जो दे सोई खाऊँ। मेरी उण की प्रीत पुराणी उण बिन पल न रहाऊँ॥ जहाँ बैठावें तितही बैठूँ बेचै तो बिक जाऊँ। मीरा के प्रभु गिरधर नागर बार-बार बलि जाऊँ॥	
3.	हे री मैं तो प्रेम दीवानी, मेरो दर्द न जाणै कोय। घायल की गति घायल जाणै, जो कोई घायल होय। जौहरी की गति जौहर जाणै, जो कोई जौहर होय। सूली ऊपर सेज पिया की, मिलना किस विध होए| गगन मण्डल पर सेज पिया की, किस विध मिलणा होय। दर्द की मारी बन-बन डोलूँ, वैध मिला नहिं कोय। मीरा की प्रभु पीर मिटेगी, जद वैध साँवरिया होय।	

4.	मेरे तो गिरधर गोपाल दूसरो न कोई मेरे तो गिरधर गोपाल दूसरो न कोई जाके सर मोर मुकुट मेरो पति सोई मेरे तो गिरधर गोपाल दूसरो न कोई कोई कहे कारो, कोई कहे गोरो कोई कहे कारो, कोई कहे गोरो लियोन हे अक्खियां को कोई कहे हलकों, कोई कहे भरो कोई कहे हलकों, कोई कहे भरो लियोन हे तराजू टोल मेरे तो गिरधर गोपाल दूसरो न कोई मेरे तो गिरधर गोपाल दूसरो न कोई कोई कहे छानी, कोई कहे छावनी कोई कहे छानी, कोई कहे छावनी लियोन हे पचंता टोल तन का गहना मैं सब कुछ दिन तन का गहना, सब कुछ दिन दियो है बाजूबंद खोल मेरे तो गिरधर गोपाल दूसरो न कोई मेरे तो गिरधर गोपाल दूसरो न कोई जाके सर मोर मुकुट मेरो पति सोई मेरे तो गिरधर गोपाल दूसरो न कोई	

4) Generic Elective / Open Elective 02 Theory 02 Practical

प्रथम अयन

पाठ्यक्रम शीर्षक :- व्यावहारिक हिंदी

इकाई I		**कहानी साहित्य**
	1	सवा शेर गेहूं - प्रेमचंद
	2	बयान – चित्रा मुदगल
	3	हंसिका फिर कभी न आई – सूरजपाल चौहान
इकाई II		**मौखिक संप्रेषण**
	1	वक्तृत्व
	2	सूत्रसंचालन
	3	साक्षात्कार
इकाई III	**प्रात्यक्षिक**	कहानी के तत्वों के आधार पर मूल्यांकन,आस्वादन,कहानी-मौलिक लेखन एवं प्रस्तुति
इकाई IV	**प्रात्यक्षिक**	मौखिक संप्रेषण : वक्तृत्व (भाषण), सूत्रसंचालन , साक्षात्कार लेखन एवं प्रस्तुति

4B) Generic Elective / Open Elective 02 Theory 02 Practical

व्दितीय अयन

पाठ्यक्रम शीर्षक :- साहित्य और लेखन कौशल

	अ.क्र.	**पाठ्यक्रम विवरण**
इकाई I	**कविता**	**कविता का नाम**
	1	वसंत आया - सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला
	2	कदम मिलाकर चलना होगा -अटल बिहारी वाजपेयी
	3	वे हाथ – सर्वेश्वर दयाल सक्सेना
	4	घर की चौखट से बाहर – सुशीला टाकभौरे
	5	बात बोलेगी - शमशेर बहादुर सिंह
	6	पेड़ - लीलाधर जगूड़ी
इकाई II		**लेखन कौशल**
लिखित	1	पत्र लेखन – पारिवारिक पत्र,व्यावसायिक पत्र,आवेदन पत्र ,शिकायती पत्र,व्यक्तिगत पत्र.
	2	रिपोर्ट लेखन
	3	विज्ञापन लेखन – मुद्रित माध्यम
	4	ई-मेल,ब्लॉग लेखन
इकाई III	**प्रात्यक्षिक**	काव्य तत्वों के आधार पर पठित काव्य पाठों का मूल्यांकन,आस्वादन ,मौलिक काव्य लेखन एवं प्रस्तुति
इकाई IV	**प्रात्यक्षिक**	पत्र-लेखन,रिपोर्ट लेखन, विज्ञापन लेखन,ई-मेल एवं ब्लॉग,मौलिक लेखन एवं प्रस्तुति

5) SEC Skill Enhancement Course 02 Credit (Theory/Practical)

प्रथम अयन

पाठ्यक्रम का शीर्षक :- भाषा शिक्षण कौशल

	पाठ्यक्रम विवरण
इकाई-I	भाषा शिक्षण -स्वरुप और उद्देश्य
	श्रवण कौशल – परिचय और प्रक्रिया
	भाषण कौशल – परिचय और प्रक्रिया
इकाई-II	वाचन कौशल – परिचय और प्रक्रिया
	लेखन कौशल – परिचय और प्रक्रिया

5B) SEC Skill Enhancement Course 02 Credit (Theory /Practical)

व्दितीय अयन

पाठ्यक्रम का शीर्षक :- हिंदी कंप्यूटिंग

	हिंदी कंप्यूटिंग	पाठ्यक्रम विवरण	पाठ्यक्रम विस्तृत विवरण
इकाई-I			
इकाई-II			

6) VEC Value Education Course 02 Credit (Theory / Practical)

प्रथम अयन

पाठ्यक्रम का शीर्षक :- नीति शिक्षा

इकाई I	कबीर के नीति विषयक दोहे
1.	निंदक नियरे राखिये,आँगन कुटी छवाय, बिन साबुन बिन पानी,निर्मल करे सुभाय |
2.	साधो इतना दीजिये,जामे कुटुंब समाय, मैं भी भूका न रहू,साधू न भूका जाय|
3.	
4.	बड़ा हुआ तो क्या हुआ,जैसे पेड़ खजूर, पंथी को छाया नहीं,फल लागे अति दूर|
5.	बुरा देखन मैं चला,बुरा न मिलया कोय, जो मन खोजा आपना,मुझसे बुरा न कोय |
6.	माला फिरत जूग
7.	पत्थर पूजे हरी मिले,तो मैं पुजू पहार, घर की चाकी कोइ न पूजे, पिस खाए संसार |
8.	कबीरा खड़ा बाजार में,लिए लकुठी हाथ, जो घर फूंके आपना,चले हमर साथ|
9.	मेरा मुझ में कुछ नहीं,जो कुछ है सो तेरा, तेरा तुझको सौंपत है, क्या लागे है मेरा|
10.	माटी कहे कुम्हार से,तू क्यूँ रौंदे मोहे, एक दिन ऐसा आएगा,मैं रौंदूंगी तोहे|
11.	कल करे सो आज कर,आज करे सो अब, पल में परलय होएगी,बहुरि करेगा कब|
इकाई II	**रहीम के नीति विषयक दोहे**
1.	जो रहीम उत्तम प्रकृति,का करि सकत कुसंग, चन्दन विष व्यापत नहीं,लपटे रहत भुजंग|
2.	बिगरी बात बने नहीं,लाख करो किन कोय, रहिमन फटे दूध को,मथे न माखन होय|
3.	रहिमन गली है संकरी,दूजो न ठहराई, आपु अहै तो हरी नहीं,हरि तो आपुन नहीं|
4.	रहिमन जिहवा बावरी,कहिगै सरग पताल, आपु तो कहि भीतर रही,जुती खात कपाल|
5.	एकै साधे सब सधे,सब साधे सब जाय, रहिमन मूलहिं सींचिबो,फूलै फ़ले अधाय|
6.	रहिमन ओछे नरन सों,बैर भलो ना प्रीति| काटे चाटे स्वान के दोऊ भांति विपरीत ||
7.	रहिमन वे नर मर चुके ,जे कहुं मांगन जाएं। उनते पहले वे मुए जिन मुख निकसत नांहि।।

8.	बड़े बड़ाई ना करैं ,बड़ो ना बोले बोल। रहिमन हीरा कब कहै लाख टको मेरो मोल ।।
9.	कहीं रहीम संपति सगे बनत बहुत बहु रीत । विपत्ति कसौटी जे कैसे तेई सांचै मीत||
10.	धरती की सी रीत है ,सीत घाम औ मेह। जैसी परे सो सहि रहे ,त्यों रहीम यह देह।।
11.	

6B) VEC Value Education Course 02 Credit (Theory / Practical)

व्दितीय अयन

पाठ्यक्रम का शीर्षक :- नीति शिक्षा

इकाई I	**कहानी**
इकाई II	**कहानी**